"कोंकणी साहित्य का आधुनिक काल : काव्य के संदर्भ में"

डॉ. चंद्रलेखा डिसूजा
रीडर, कोंकणी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा.

आज जिस भौगोलिक दृष्टि से गोवा को पहचाना जाता है, उसे पहले 'गोमन्तक' या 'गोमान्तक' नाम से जाना जाता था। जिसका उल्लेख महाभारत के भीष्मपर्व के नवम अध्याय में 'गोमन्तक' इस देशवाचक और लोकवाचक शब्द के रूप में, किया गया है। स्कंद पुराण में जो सह्याद्री खंड है, उसमें 'कोंकणाख्यान' मिलता है ऐसे कोंकणी विश्वकोश-१ में लिखा गया है। कोंकणाख्यान के रचियता कौन है इसके बारे में विद्वानों का एकमत नहीं है। गोवा का उल्लेख 'अपरांत' या कोंकण प्रांत के नाम से मौर्यों की सत्ता में हुआ है। राजा अशोक के समय के स्तूप इ.स. १८८२ में सर जेम्स कॅपवेल और पंडित भगवानलाल ने उत्खनन में खोज निकाले हैं। बौद्ध धर्म के हीनयान पंथ के सादे विहार भी यहां पाए गए हैं। सन १९३० में कोलवाळ गांव में महायान धर्मपंथ का चिह्न दिखाती हुई बुद्ध की मूर्ति फादर हेरस को प्राप्त हुई है। सातवाहन, कदंब, चालुक्य, राष्ट्रकूट, शिलाहार, आदिलशाही सत्ता और अंत में सन् १५१० में सत्रह फरवरी को, गोवा में पुर्तुगाली शासन ने अपनी सत्ता को यहां कायम किया। सन् १९६१ में, उन्नीस दिसंबर को गोवा इस शासन से मुक्त हुआ और स्वतंत्र भारत का अविभाज्य अंग बन गया।

आमतौर पर लोग यह कहते हैं कि पुर्तुगाली लोगों ने अपने शासन काल में कोंकणी साहित्य जो मंदिरों में था, उसे जला दिया। उस तथ्य पर विचार करें तो लगता है कि जो हिस्सा पुर्तुगाली शासन में था वहाँ का साहित्य जला दिया गया, पर जो हिस्सा उनके शासन में नहीं था, वहाँ के मंदिरों में से तो कुछ मिलना चाहिए था। जो कि आज तक मिला नहीं है। कोंकणी भाषा और साहित्य के साहित्यिक इतिहास का सर्वेक्षण करें तो एक और तथ्य सामने आता है, वह यह कि Father Thomas Stephens -1549-1619- जिन्हें कोंकणी में प्रथम मुद्रित व्याकरण का रचयिता माना जाता हैं। गोवा में रहते हुए उन्हों ने क्रिस्त पुराण-रोमन लिपि में Krista - Puran की रचना मराठी में की, जिसमें कोंकणी शब्द पाएं जाते हैं और उन्होंने गद्य कोंकणी में लिखा। पुर्तुगाल राज्य के एक शहर ब्रागा के ग्रंथालय में सोलहवीं शताब्दी का लिखा हुआ गद्य है, जिसमें रामायण, महाभारत और पंचतंत्र की कथाएँ हैं। पुर्तुगाली मिशनरियों ने यहां के रहनेवालों से ये कथाएँ सुनी थीं और उन्हें अपनी रोमन वर्णमाला में उतारा था। अर्थात प्रारंभ में जो कार्य शुरू हुआ वह सब रोमन लिपि में हुआ था। सन् १५१० पहले अलग अलग शासकों के काल में भाषा भी अलग अलग ही रही थी। कदंब काल में, गोवा में, कांदवी लिपि व्यवहार में थी। कोमुनिदाद (ग्रामसंस्था) के पत्र व्यवहार और

श्रीमंत घरानों के कौटुंबिक व्यवहार, हिसाब के पत्र प्राप्त हुए हैं जो कांदवी लिपि में हैं। इस लिपि को कानडी लिपि या गोंय कानडी (गोंय-गोवा) नाम से भी जाना जाता है।

गोवा मुक्ति के समय नागरी लिपि की कोंकणी को सुदृढ बनाने का कार्य, वामन रघुनाथराव वर्दे वालावलीकर, जिन्हें कोंकणी साहित्य में शणै गोंयबाब के नाम से जाना जाता है, उन्होंने किया है। हिंदीं साहित्य में उस समय प्रेमचंद का कार्य चल रहा था। शणै गोंयबाब का जन्म २३ जून १८७७ और मृत्यु ९ अप्रैल १९४६ में हुई। प्रेमचंदका अंतिम उपन्यास १९३६ का है। गोवा ने जब अलग राज्य की मांग की थी उसके साथ साथ कोंकणी का भविष्य (पढें प्रो. रॉकी मिरान्दा का लेख जुलाई - 'जाग' २००८ पृ. २५-४२ 'प्राचीन कोंकणी भारत') भी जुड़ा हुआ था। सन १९७५ में साहित्य अकादमी ने कोंकणी भाषा को मान्यता दे दी। १९८६ में कोंकणी गोवा राज्य की राज्यभाषा बनी। स्कूल कॉलेजों में तथा विश्वविद्यालय में नागरी लिपि को ही अपनाया गया है पर इस भाषा का पुराना इतिहास रोमन लिपि, कदंबी लिपि में भी है। रोमन लिपि में आज भी रचनाएँ हो रही हैं। धर्मांतरण काल में गोवा से स्थानांतरण दक्षिण की तरफ क्रमशः कर्नाटक और कोची में हुआ। गोवा में जब शणै गोंयबाब कोंकणी साहित्य सृजन कर रहे थे तब कर्नाटक में Louis Mascarenhas-1887-1961 मेंग्लोर में कन्नड़ लिपि में कोंकणी सृजन कर रहे थे। आज भी कन्नड़ लिपि का उपन्यास साहित्य, गोवा की नागरी लिपि के साहित्य की तुलना में ज्यादा संपन्न है। अलग अलग लिपि के कारण कोंकणी भाषा बिखरी पड़ी है। आज के दौर में भी कोंकणी की साहित्यिक रचनाएँ मेंगलोर और कन्नड़ प्रदेश में कन्नड़ लिपि में हैं। गोवा में रोमन और नागरी लिपि में हैं। कोची में मल्याळम लिपि में है, हालांकि कोची में नागरी लिपि को मान्यता मिल चुकी है। कर्नाटक के कुछ हिस्सों में कोंकणी भाषी मुस्लिम लोगों ने अरबी फारसी का प्रयोग करके कोंकणी भाषा को लिखा। लिपि की यह विविधता कोंकणी के लिये एक मर्यादा भी उत्पन्न करती है। इनके बीच में आदान-प्रदान न के बराबर है। गोवा की कोंकणी अकादमी और कुछ कोंकणी प्रेमी कन्नड़ लिपि का कोंकणी साहित्य नागरी लिपि में लाने का कार्य कर रहे हैं, पर ये प्रयत्न पर्याप्त नहीं हैं। अलग अलग प्रांतों में बसे हुए कोंकणी प्रेमी को एक दूसरे से कैसे जोड़ा जाए, यही एक समस्या है। अगर कोंकणी प्रेमी राजकीय बखेड़ों से उपर उठकर साहित्यिक क्रियाशीलता दिखा सकें तो ही कुछ हो पाएगा।

कोंकणी साहित्य पर जब जब हिंदी में लेख लिखती हूं तब तब अलग अलग लिपियों के कारण कोंकणी का संपूर्ण साहित्यिक परिदृश्य स्पष्ट करने में अपने आपको असमर्थ पाती हूं। कोंकणी के पास अपना इतिहास तो हैं पर साहित्यिक इतिहास नहीं है। मैं जो यह लेख प्रस्तुत कर रही हूं उसमें सिर्फ गोवा की नागरी लिपि की कोंकणी का चित्र उभरकर आएगा। थोड़ा बहुत रोमन लिपि का चित्र भी उभरेगा, पर कन्नड़, मलयाळम और अरबी फारसी लिपि के साहित्य के रंग देने में मैं. असमर्थ हूं। मेरे इस लेख की सब से बड़ी मर्यादा यही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गोवा में नागरी लिपि की कोंकणी में कविता, कहानी, नाटक, निबंध, अनुवाद, उपन्यास विधा में विकास समान रूप से कार्य चल रहा है। उसे देखने से पहले रोमन लिपि

की कोंकणी के बारे में जान लें तो बेहतर होगा।

पुर्तुगाली शासन के आरंभ में, उन्होंने कोंकणी भाषा को कुचलने का कार्य जरूर किया, पर बाद में चर्च और उनकी अलग अलग संस्थाओं ने सन १५४२ में कोंकणी भाषा को आगे बढ़ाने का परिश्रम किया। सन् १५५६ में, ५ सितंबर को, भारत देश में सबसे पहला मुद्रणयंत्र गोवा में आया, यह श्रेय पुर्तुगाली शासकों को ही देना होगा उनका उद्देश्य चाहे धर्मप्रचार-प्रसार का ही रहा हो पर उन्हींकी बदौलत एशिया की प्रथम पुस्तक जो मुद्रित हुई, उसे Fr. Thomas Stephen's ने लिखा था, जिसका नाम था "Doutrina Christan em Lingua- Brama Canarim"

Eng. title - "Christian Doctrine in Brahmin Konkani Language. सन १६२२ में प्रकाशित हुई।

इसी परंपरा में

Diogo Ribeiro - 1560-1633

Etienne da-La Croix - 1579-1643

Antonio Saldhana - 1598-1963

Miguel de Almeida - 1607-1683...

आदि नाम भी हैं। पुर्तगालियों ने पुर्तगाली भाषा में भी साहित्य की रचना की थी। गोवा के लोगों ने शासकों की भाषा को गोवा के स्कूलों में पढ़ते हुए बाद में उसी भाषा में रचनाएँ लिखीं। शब्दकोश बनाने की प्रवृत्ति भी उन दिनों चल रही थी। मोंन्सिन्योर, दालगादो ने पुर्तुगीज-कोंकणी तथा कोंकणी पुर्तुगीज शब्दकोश दिए। कुन्य रिवारा और' त्रिस्तांव ब्रागांझ कुन्य का नाम भी इसी परंपरा के साथ जुड़ा हुआ है। आज भी गोवा में, रोमन लिपि में साहित्य रचा जा रहा है। भविष्य में जब इनका साहित्यिक इतिहास उपलब्ध होगा तब कुछ ठोस रूप में कहा जा सकेगा।

कोंकणी काव्य :- सन् २००८ तक आते आते कोंकणी काव्य काफी विकास कर चुका है। गीता प्रसार, म्हाप्सा द्वारा प्रकाशित 'ज्ञानेश्वरी' कोंकणी में अनूदित होकर आ चुकी है। अनुवादक सुरेश गुंडू आमोणकार हैं। इन्हीं के द्वारा रचित 'श्री भगवंतान गायिल्ले गीत' अर्थात श्रीमदभगवदगीता के श्लोक अब कोंकणी भाषा में उपलब्ध हैं। सिर्फ एक बात समझ में नहीं आई कि अनुवादक 'गीता' को 'श्री भगवंतान गायिल्ले गीत' अर्थात श्री भगवंत का गाया हुआ गीत क्यों कहते हैं? श्री भगवंत ने इसे कब गाया था? भारतीय भाषाओं में किसीने भी इसे 'गीत' नहीं कहा हैं। सिर्फ कोंकणी में ही यह शब्द प्रयोग क्यों हो रहा हैं? खैर, आनेवाले समय में, आलोचना के परिप्रेक्ष्य में इसे तय किया जाएगा। इस मुद्दे को यहीं छोड़कर आगे बढ़ती हूं। इस पुस्तक के बारे में एक और तथ्य की ओर मेरा ध्यान जाता है, वह यह कि अनुवादक ने संस्कृत श्लोक के साथ उसका कोंकणी समश्लोक देकर, उसका अन्वय, उसके अर्थ देकर सामान्य पाठक के लिए उन श्लोकों को और भी संप्रेषणीय बनाने का कार्य किया है।

'श्रीरामचरितमानस' मानवीय संबंधों के अंतर्गत महान माना गया है इसका अनुवाद संस्कृत, उड़िया, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी, रुसी आदि भाषाओं में हो चुका है। अब कोंकणी भाषा में भी इसका अनुवाद हो चुका है। 'कोंकणी भाषा प्रचार सभा', कोची द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है। के. अनन्न भट ने इसे अनूदित करके कोंकणी की शोभा बढ़ाई है। अनुवादक के पास संस्कृत, हिंदी, कोंकणी, अंग्रेजी इन भाषाओं का ज्ञान होने के कारण यह अनुवाद

दोहा, चौपाई छंद, सवैया, सोरठा की शैली में ही कोंकणी भाषा में भी अवतरित हुआ है। प्रबंध काव्य की यह अनूदित रचना कोंकणी साहित्य के लिए विकासात्मक सोपान है।

एन. पुरुषोत्तम मल्या की रचना 'पंचशतक' और 'हरिरंग भट शतकं' में भारत के पांच महान व्यक्तियों पर शतश्लोक रचे गए हैं। कोंकणी काव्य की यात्रा में अलग प्रवाह अपना अस्तित्व दिखा रहे हैं। उपरोक्त उल्लेखित रचनाएँ क्रमशः २००५ और २००४ की हैं। मूलतः कोंकणी काव्यधारा तीन प्रवाहों में देखी जा सकती हैं। पहला प्रवाह काशीनाथ श्रीधर नायक और बाकीबाब बोरकार का है। बाकीबाब की रचनायात्रा मराठी भाषा से शुरू हुई और, कोंकणी में उन्होंने दो काव्य संग्रह दिए - 'पांयजणां' अर्थात 'पैंजनियां' और 'सासाय' अर्थात 'अनुग्रह', इन दोनों काव्य-संग्रहों के विषयों को देखें तो तत्कालीन परिस्थितियों का चित्र सामने आ जाता है। गोवा के विलीनीकरण का जिक्र और जनमत के प्रसंग से बुने गए इस काव्य संग्रह में गैयतत्त्व अधिक द्रष्टव्य होता है। दूसरा प्रवाह मनोहरराय सरदेसाय के काव्यों का है। गोवा का समाज और हिंदू-ख्रिश्चन समाजों में आदान-प्रदान तथा प्रेम भावना का संदेश दिखाई देता है। साथ साथ गोवा मुक्ति के बाद की लोकशाही में क्या क्या हो रहा है उसका व्यंग्य पूर्ण चित्र-उभरता दिखाई देता है। तीसरा प्रवाह है रघुनाथ वि. पंडित की काव्य सरिता का। कालांतर में दूसरा और तीसरा प्रवाह मिलकर, कोंकणी काव्य को अलग अलग विशेषताओं में बहा रहा है। पांडुरंग भांगी, शंकर रामाणी, लक्ष्मणराव सरदेसाय, विजयाबाय सरमळकार, नागेश करमली, पुरुषोत्तम शिंगबाळ, माधव बोरकार, शंकर भांडारी, उदय भेंब्रे, प्रकाश पाडगांवकार आदि नाम लिए जा सकते हैं। कोंकणी काव्य प्रवाह में नए स्पंदन लाने का कार्य बहुत कवियों ने किया, उनमें प्रकाश पाडगांवकार का नाम महत्त्वपूर्ण है। कोंकणी कविता में नए बिंब और मिथक देने में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनके एक काव्य संग्रह का नाम है - 'हांव मनीस अश्वत्थामी' - उन कविताओं में से एक उदाहरण देती हूँ जहां वे पुराण के 'राम' का उल्लेख करके उसे आधुनिक यथार्थवादी राम बना देते हैं-

कोंकणी कविता - 'खेळणें' समजून/खेळपाक वाटकुळो चंद्रच जाय/म्हूण आडांगीपणां करपी अपुरबाये राम/उपाशी वा अर्ध्या पोटार वाडपी/नशिब फुटको भुरगो आशिल्लो जाल्यार/त्याच चंद्राक तो घडये रिती वाटली समजुपाचो.

हिंदी भाव : खिलौने समझकर/ खेलने के लिए गोल चंद्रमा ही चाहिए/ इसलिए मचलने वाले राम/अगर भूखा और अर्धभूखा रहकर पलनेवाला बदनसीब बच्चा होता तो शायद/ उस चंद्रमा को दूध की खाली कटोरी समझता। (पृ.४९)

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद हमारी बहुत सारी धारणाएँ बदल चुकी हैं। ईश्वर के बारे में हमारी कल्पना, अवधारणा किस रूप में बदली है, जिसे कवि बदलते संदर्भों में प्रस्तुत करते हैं। 'खिलौना' होना एक बात है और चंद्रमा 'दूध की खाली कटोरी में' तब्दील हो जाना और बात है। इसी प्रकार का चिंतन कन्नड़ लिपि की कोंकणी में, चार्लस फ्रांसिस द कोस्ता और जे. बी. मोरायस देते हैं। कोंकणी कविता में सूक्ष्म संवेदन और सघन बिंब देने का प्रयत्न इन दोनों कवियों ने किया है। अगर कर्नाटक की नेत्रावती नदी और गोवा की जुआरी नदी का संगम हो तो नेत्रावती के नेत्रों में जुआरी का प्रतिबिंब

झलकेगा और जुआरी की बांहों में उसे समाने का और संवार ने का तथा नया आयाम देने का सपना साकार होगा। कवि जे. बी. मोरायस की कविता का एक सूक्ष्म संवेदन देखें-

शबनम - थिरकते पत्तों पर
पसरा उसमें आसमान (भितरलें तूफान - पृ. ४४)

पत्तों की थिरकन और पसरता आसमान शबनम में जो बिंब सृष्टि झलकती है वह थिरकन के साथ साथ पसरन को भी व्यक्त करती रहती है।

कोंकणी काव्य में पांडुरंग भांगी अपनी रहस्यात्मक अनुभूतियों से रहस्यमय बने हुए हैं। उनकी कविता का हिंदी संवेदन 'चांफेल्ली सांज' (चंपई सांज) पृ. २५ पर शहर विस्तृत हो रहा है....

अंधेरा उतर रहा...
दीप प्रज्वलित हो रहे
लोग आहिस्ता आहिस्ता....
घर की ओर आ रहे...

कोंकणी कवयित्रियों के योगदान पर ध्यान देना होगा क्योंकि अपनी अनुभूति को व्यक्त करने में उनका अपना नज़रिया होता है। सब से पहले विजयाबाय सरमळकार को याद रखना होगा। कोंकणी काव्य जगत में सब से वरिष्ठ होने का मान उन्हीं का है। उनके बाद जो नामावली मिलती है वह इस प्रकार है -

शकुंतल आरसेकर, प्रशांती तळपणकर, जयंती नायक, करुणा पाडगांवकार, कुंदा पै, चंद्रब्बा भांडारी, गोल्डा रोद्रिगश, नूतन साखरदांडे, माया सरदेसाय, नयना सुर्लकार, लीना हेदे, राजश्री सैल, अमिता सुर्लकार। स्त्रियाँ अपने समय में अपने प्रश्नों को लेकर आती रही हैं। गोवा-मुक्ति १९६१ में हुई। इसके बाद गोवा भारत देश का अविभाज्य अंग बन गया। स्वातंत्र्य मिला, साथ में मोहभंग भी हुआ। औद्योगीकरण जरूरी था, है, पर साथ में पर्यावरण का प्रदूषण भी उसीकी ही बाय प्रोडक्ट है। लोहतत्त्वों के कणों से नहाकर प्रकृति, हरे भरे कणों को भूल चूकी है। फेफड़ो में लोहकणों का बसेरा है। छोटे छोटे घर बड़े कंपाऊंड थे, वहां अब बड़ी इमारतें और छोटे कमरें हैं, जमीन के दाम आसमान को छूते हैं और परिवार के लिए पति-पत्नी दोनों को घर का अर्थशास्त्र संभालने, घर से बाहर काम करना आवश्यक हो गया। पिता के लिए यह बात आम है, पर माँ के लिए यही बात खास है, जो उसे सोचने पर बाध्य करती है...तुम्हें नौकर के पास या आया के पास छोड़कर जा रही हूँ...तुम्हारी सच्ची मॉ कौन है? जो पूरा दिन ऑफिस में काम करते हुए तुम्हारे बारे में सोचती है वह या जो पूरा दिन तुम्हारे साथ रहती है? लीना हेदे भी उन्हीं विचारों को व्यक्त करती दिखती हैं -

सबकुछ किया तुमने सही है,
पर,
हमारा भी किया कुछ तो था,
तुम्हारे कर्तृत्व के कणकण में,
हमारा भी रक्त था बहा....
फिर भी तुमने कहा
सबकुछ मैंने ही किया?

नारी को देवी बनाना आसान है, पतिता बनाना तो और भी आसान है...नारी को नारी ही रहकर जिंदा रहना है, अपनी मंजिल को पाना है, अपने मनुष्यत्व को पाना है। स्त्री-पुरुष हम बाद में हैं, सब से पहले हम मनुष्य हैं। स्व. अमिता सुर्लकार की कविता की कुछ पंक्तियों का भावार्थ -

मस्तिष्क पर उसके/सिर्फ अपने परिवार की ही नहीं, पर-पूरे विश्व की जिम्मेवारी की रेखा/खींचनी चाहिए। ओंठों पर उसके शब्द क्रांति के। देने चाहिए....बेलन फेंककर हाथ का। अन्याय विरूद्ध लड़ने की जलती मशाल चित्रित होनी चाहिए।

आनेवाले समय में कोंकणी कविता का स्वरूप क्या होगा ये तो कविताएँ ही बता पाएंगी। परेश नरेंद्र कामत का काव्य संग्रह 'गर्भखोल' (गर्भगहन) उल्लेखनीय है। राजय रमेश पवार भी आशावादी हैं। 'त्सुनामी' पर लिखी डॉ. नंदकुमार कामत की कविता जो कि 'ज़ाग' (कोंकणी की मासिक पत्रिका) में, २००५ की रचना उल्लेखनीय है -

सुन्न आमी, खिन्न आमी, शून्य आमी-
(सुन्न हम, खिन्न हम, शून्य हम......)

इस महास्फोट में, यह सब कुछ, यह महाकाल,

यह अवकाश/यह अंतरिक्ष,/ यह गति/ यह स्थिति/ यह चराचर/ सजीव/ निर्जीव/ अतल/ भूतल/पाताल/तलातल/महाताल....

समसामयिक संदर्भों में कोंकणी गतिशील है। सन् २००८ में कोंकणी के चतुर्थी अंक 'सुनापरान्त' में, पृ.११०-११४ पर, जो कविताएँ द्रष्टव्य होती हैं उनके कवि और कविताओं के विषयों को देखें तो -

शेत (खेत) - मनोराय नायक
जल्मूक नासलेलो ताळो - जेस फर्नांदीश
(पैदा नहीं हुई वह आवाज़).
हया आशाढांत - नूतन साखरदांडे
(इस आषाढ़ में)
वत (धूप) - नरेंद्र कामत
शब्दुली - (फूल का नाम) नयना आडारकार
काटमुयो - राजय पवार
विस्वास - सरस्वती दामोदर नायक
मनीसपण (मनुष्यता) - अलका सिनाय असोळडेकार
इतियास - रामानंद तारी

'जाग' पत्रिका सप्टें. २००८ वर्ष ३५, अंक २, पृ.२६ जो कविताएँ उनमें - शजश्री सैल की कविता 'कदंब बस स्टँण्ड मडगांव' मेरे विचार से ज्यादा उल्लेखनीय है। राजश्री ने कोंकणी काव्य में आज तक जीवनी कविताएँ लिखी हैं उनमें से यह उक्त कविता सर्वथा भिन्न है। 'सुनापरान्त' की चतुर्थी विशेषांक की कविताएँ विषय, वस्तु और शैली संदर्भों में कहीं भी नयापन नहीं देती, पर 'जाग' की कविता कोंकणी काव्य में जहां तक राजश्री की कविताओं का सवाल है यथार्थवादी दृष्टि के साथ साथ मानवीय संवेदना संदर्भ में भी बहुत आगे हैं। वैसे तो स्वामी सुप्रिय का काव्य संग्रह 'अस्तमतेर' जे. बी. मोरायस रचित 'भितरले तुफान', चा. फ्रा. द कॉस्ता की रचना 'सोश्याचे कान', मनोहरराय सरदेसाय की दीर्घ कविता 'लोकशाय', प्रकाश पाडगांवकार की दीर्घ कविता 'वास्कोयन' और काव्य संग्रह 'हांव मनीस अश्वत्थामी' यथार्थवादी चिंतन को लेकर है, पर राजश्री सैल की व्यक्तिगत कविता यात्रा में उक्त कविता आयाम, संवेदन और चिंतन में अलग ही है।

समसामयिक संदर्भ में कोंकणी कविता गतिशील है। उसे अभी बहुत आगे की यात्रा तय करनी है। कथ्य और शिल्प गठन के मामलों में उसकी यात्रा अभी अपने गंतव्य से काफी दूर है।

❖ ❖ ❖